शरारती कौवा

इरिना हेल

बहुत पहले दो बच्चे, कॉन्सटेंटाइन और मरीना, अपने शीतकालीन कीव शहर से गांव में गर्मी बिताने के लिए आए थे. वहाँ, बगीचे में, उन्हें एक घायल कौवे का बच्चा मिला. उन्होंने उसे पालने का फैसला किया और उसे "क्रा-क्रा" नाम दिया.

एक पालतू जानवर के रूप में क्रा-क्रा बहुत मजेदार था, बच्चों को यह जल्द ही पता चल गया. वास्तव में वो एक बहुत शरारती कौआ था. एक दिन पाठ के दौरान, क्रा-क्रा ने कमरे में उड़ान भरी और बच्चों की स्कूली किताबों पर स्याही बिखेर दी. और जब धुले कपड़े डोरी पर सूख रहे होते थे तो क्रा-क्रा सभी कपड़ो की पिनों को निकाल देता था. मरीना के जन्मदिन की पार्टी पर वो अपने अन्य दोस्तों को खिड़कियों से अंदर लाया और उन्होंने वहां रखा सारा स्वादिष्ट भोजन खा लिया. कॉन्स्टेंटाइन और मरीना को क्रा-क्रा को जंगल में छोड़ने जाने को कहा गया. लेकिन जब बच्चे वापसी पर जंगल में अपना रास्ता खो बैठे फिर क्रा-क्रा ने ही उन्हें सही रास्ता दिखाया. उसके बाद क्रा-क्रा को परिवार के साथ रहने दिया गया - लेकिन वो अपनी शरारतें लगातार करता रहा!

क्रा-क्रा की मनोरंजक कहानी वाकई में एक सच्ची कहानी है, जिसे इरिना हेल के चाचा ने उन्हें सुनाई थी.

शरारती कौवा

इरिना हेल

एक बार दो बच्चे थे - कॉन्सटेंटाइन नाम का एक लड़का
और मरीना नाम की एक लड़की.

वे दूर कीव में अपनी माँ और पिता और अपनी नौकरानी नियानिया के साथ रहते थे.

सर्दी लंबी और ठंडी थी और बच्चे बेसब्री से बर्फ के पिघलने का इंतजार कर रहे थे ताकि वे शहर छोड़कर अपने गांव के घर जा सकें.

नियानिया ने उनके खिलौने और कपड़े पैक किए, और जब सब कुछ तैयार हो गया, तो परिवार ने पैडल स्टीमर से नदी पर सवारी की.

वो एक लंबी यात्रा थी. लेकिन आखिरकार वो अपनी मंज़िल पर आ पहुंचे. इवाश्का, घोड़ागाड़ी के साथ उन्हें घर ले जाने के लिए गोदी पर इंतजार कर रहा था.

वे गाड़ी में बैठे और सूरजमुखी के खेतों को अपने पीछे छोड़ते हुए धूल भरे रास्तों से आगे बढ़े.

अपने ग्रीष्मकालीन घर के फाटक में मुड़ने के बाद, उन्होंने अवदोतिया - रसोइया, ग्रिशा - माली, और नौकरानी माशा को उनका अभिवादन करने के लिए दौड़ते हुए देखा.

बच्चों ने उन्हें गले लगाया और फिर सीधे अटारी में अपने कमरे में चले गए यह देखने के लिए कि क्या अभी भी सब कुछ पिछले साल की तरह ही था.

जब उन्होंने खिड़की से बाहर झाँककर देखा तो उन्हें बगीचे के ऊँचे पेड़ के नीचे कुछ छोटा और काला पड़ा दिखाई दिया.

"वो क्या है?" कॉन्स्टेंटाइन ने पूछा.

"चलो चलकर देखते हैं," मरीना ने कहा.

घास पर नीचे, उन्हें एक घायल कौवे का बच्चा मिला. ऐसा लग रहा था जैसे वो अपने घोंसले से गिर गया हो.

"बेचारा," मरीना ने कहा.

"चलो उसे रखते हैं," कॉन्स्टेंटाइन ने कहा. "हम उसे किस नाम से बुलाएँगे?"

"क्रा-क्रा," कौवे ने कांव-कांव किया.

इस तरह उसका ना क्रा-क्रा पड़ गया.

बच्चों ने कौवे को उठाया. वो नियानिया को दिखाने के लिए उसे घर में ले गए. नियानिया हर चीज़ का इलाज जानती थी - फुंसी से लेकर बुरे स्वभाव तक, वो कुछ भी ठीक कर सकती थी.

नियानिया ने कौवे के ज़ख़्मी पैर को सीधा रखने के लिए पैर को लकड़ी के दो टुकड़ों के बीच बांध दिया.

वो देखकर कॉन्सटेंटाइन अपने पैर के लिए भी लकड़ी की पट्टी की मांग की और वैसा ही मरीना ने भी किया.

क्रा-क्रा का बच्चों से बहुत लगाव हो गया. वो दिन भर उनका पीछा करता था और उनके सभी खेलों में शामिल होता था.

उसे नहाना बहुत पसंद था. और जब वो नियानिया को पानी में मुट्ठी भर भोजपत्र के पत्तों को हिलाते हुए देखता, तो वो ऐसे चिल्लाता था जैसे कह रहा हो कि वो भी नहाना चाहता था.

एक पालतू जानवर के रूप में क्रा-क्रा बहुत मज़ेदार था. लेकिन बच्चों को जल्द ही पता चल गया कि वो एक बहुत शरारती कौआ भी था.

एक दिन, बच्चे अपने ट्यूटर के साथ अंकगणित का अभ्यास कर रहे थे, तभी क्रा-क्रा कमरे में उड़कर आया.

वो मरीना की मेज पर बैठ गया और उसकी नोटबुक पर स्याही बिखेर दी. मरीना ने जल्दी से क्रा-क्रा को बगीचे में धकेल दिया.

बगीचे में माशा धुले कपड़े सुखा रही थी. क्रा-क्रा वहां उड़कर गया, और जैसे ही माशा ने डोरी पर कपड़े लटकाए, वैसे ही क्रा-क्रा ने कपड़े की पिन्स को निकाल दिया जिससे बहुत से कपड़े नीचे कीचड़ में गिर गए.

"उस कौवे को तुरंत पिंजरे में बंद कर देना चाहिए," माँ ज़ोर से चिल्लाईं.

इसलिए जब बच्चे गांव के मेले में घूमने गए तो क्रा-क्रा को घर पर ही रखा गया. लेकिन किसी तरह वो अपने पिंजरे से बाहर निकलने में कामयाब रहा और फिर वो उड़ गया.

"वहाँ देखो," कॉन्स्टेंटाइन अचानक चिल्लाया. "वो क्रा-क्रा ही है."

संगीतकारों को यह देखकर बहुत गुस्सा आया कि क्रा-क्रा ने उनकी ढोलक में अपनी चोंच से एक छेद कर दिया था और प्रदर्शन करने वाला भालू मिशा बहुत गुस्से में था क्योंकि इस हंगामे में, कोई भी उसका नृत्य नहीं देख रहा था. मरीना और कॉन्सटेंटाइन को जल्दी घर भेज दिया गया. क्रा-क्रा ने बहुत हंगामा मचाया था.

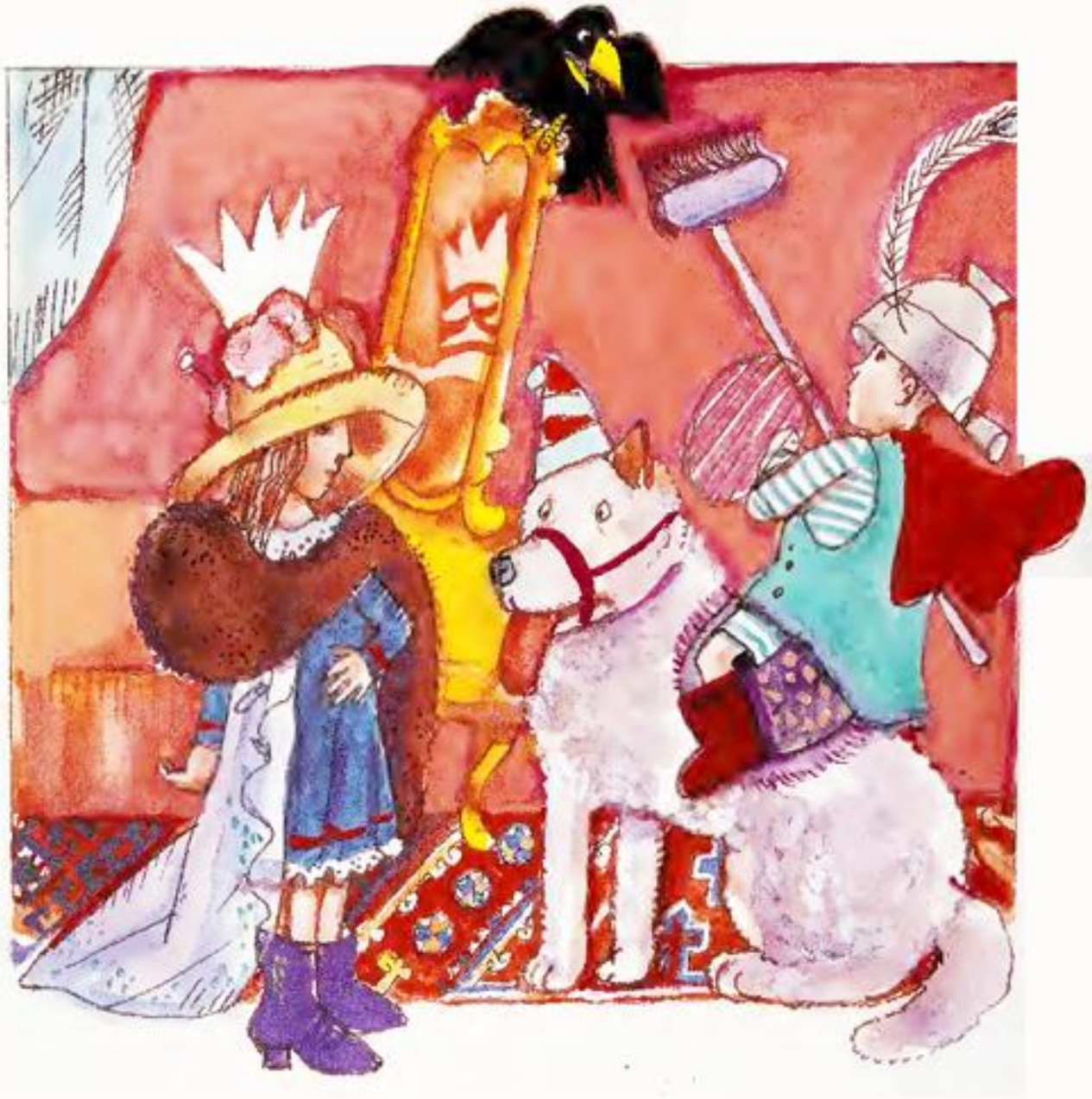

फिर बच्चों ने माँ के बेडरूम में सजने-संवरने का खेल खेलने का फैसला किया.

"मैं सेंट जॉर्ज हूं," कॉन्सटेंटाइन ने झाड़ू लहराते हुए और अपने कुत्ते, बुरिया की पीठ पर बैठते हुए कहा.

"मैं राजकुमारी हूँ," मरीना ने कहा. "हम ड्रैगन के लिए किसका उपयोग करें?"

"क्रै-क्रै ड्रैगन बन सकता है," कॉन्स्टेंटाइन ने कहा.

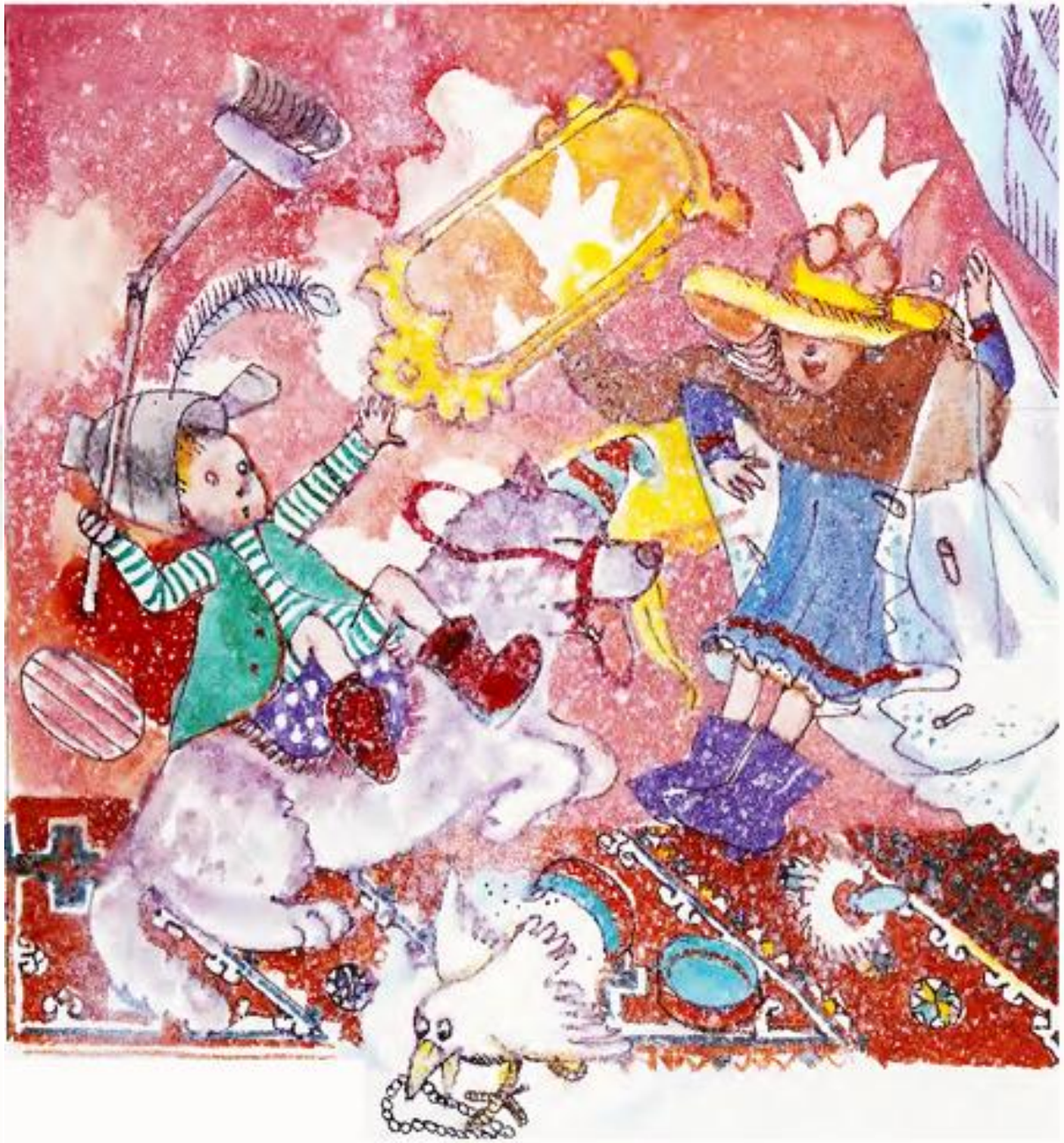

क्रे-क्रै ड्रैगन नहीं बनना चाहता था. एक चीख़ के साथ उसने बुरिया को डराया और फिर उसकी पहुंच से बाहर उड़ गया. डर से कुत्ता उछला जिससे कॉन्सटेंटाइन फर्श पर गिर पड़ा. उससे माँ का पाउडर कालीन पर बिखरा गया. क्रा-क्रा ने माला पर झपट्टा मारा और फिर सीधे खिड़की से बाहर उड़ गया.

क्रा-क्रा ने ऊँचे पेड़ की शाख पर बैठ गया उसकी चोंच में अभी भी माला लटकी थी.

मरीना उसके पीछे बगीचे में भागी.

"तुरंत नीचे आओ, नटखट पक्षी," वो चिल्लाई. वह पेड़ पर चढ़ने लगी, लेकिन उसका पेटीकोट पेड़ की एक शाख में फंस गया.

फिर सभी लोग दौड़े-दौड़े आए. वो देख क्रा-क्रा डर गया और उसने माला को नीचे गिरा दिया. किसी ने मरीना को सीढ़ी पर चढ़कर बचाया. क्रा-क्रा की शरारत से लोग काफी परेशान थे.

फिर कुछ दिनों बाद मरीना का जन्मदिन था. उसके लिए पिकनिक की योजना बनाई गई और उसके चचेरे भाइयों को आमंत्रित किया गया. कॉन्सटेंटाइन को यह सुनिश्चित करने के लिए घर पर रहना पड़ा कि क्रा-क्रा उस दिन कोई शरारत नहीं करे.

"यह ठीक नहीं है," कॉन्स्टेंटाइन ने शिकायत की.

"क्रा!" कौवे ने कहा.

"काश उस दिन पिकनिक पर भयानक बारिश हो!"

"क्रा-क्रा!" कौवे ने कहा.

"काश कि गाड़ी का पहिया निकल जाए!" कॉन्स्टेंटाइन ने कहा,

"क्रा-क्रा!" कौए ने अपनी आंखों में एक शरारती चमक के साथ कहा.

कुछ देर बाद परिवार लौटा. सभी लोग भीगते हुए और पैदल चलकर आए.

मरीना ने कहा, "तुम कभी अनुमान नहीं लगा पाओगे कि क्या हुआ. बहुत तेज़ बारिश हुई और हमारी गाड़ी कीचड़ में फंस गई और उसका एक पहिया निकल गया. उससे हम सब बहुत परेशान हुए."

"और उसके लिए हम तुम्हारे कौवे को दोष नहीं दे सकते," पापा ने मजाक में कहा. "अच्छा, उसका बर्ताव कैसा था?"

"बहुत अच्छा!" कॉन्स्टेंटाइन ने कहा.

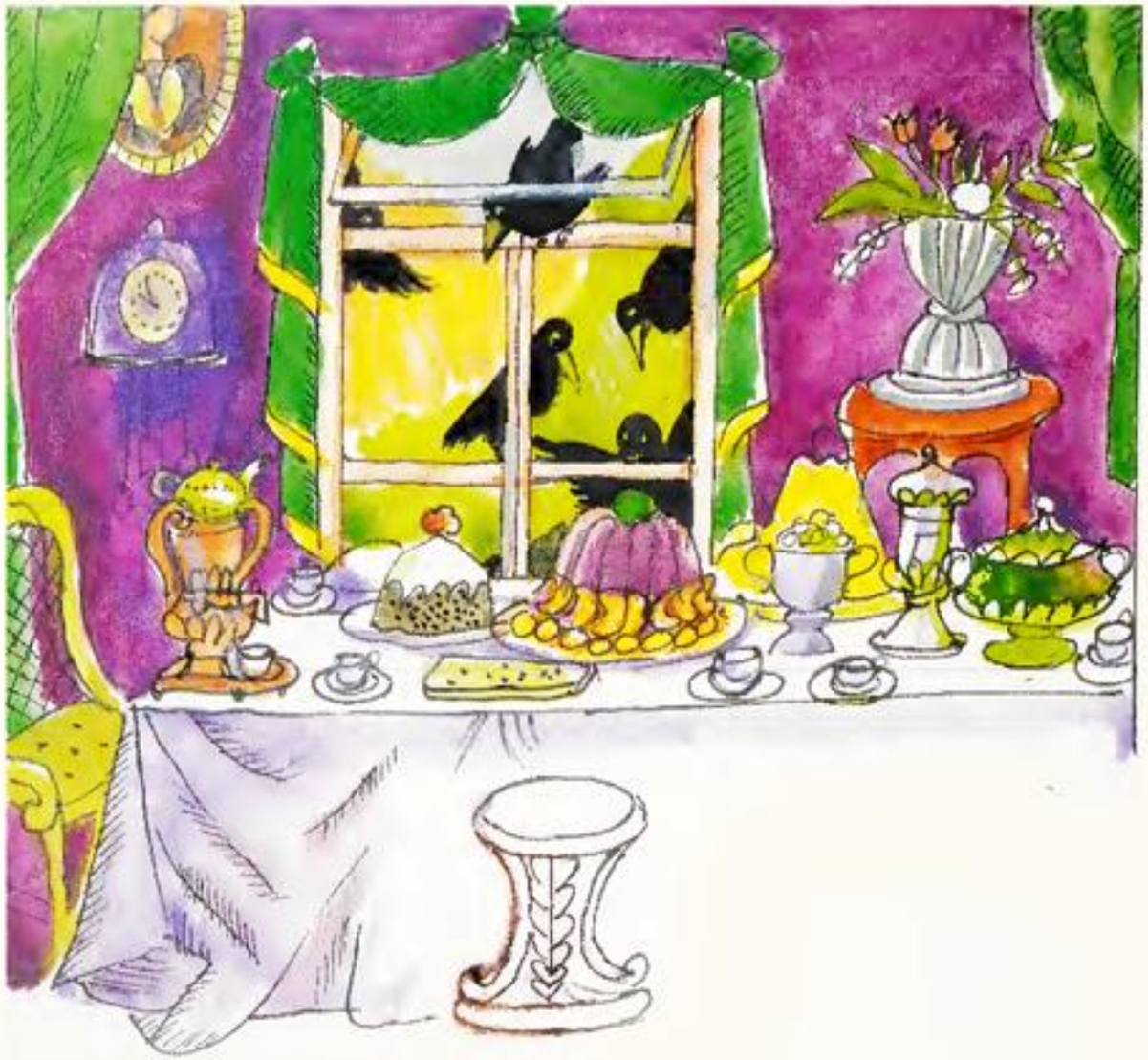

कॉन्स्टेंटाइन यह बात कुछ जल्दी बोल गया था. जब वे जन्मदिन की दावत के लिए भोजन कक्ष में दाखिल हुए, तो उन्होंने पाया कि क्रा-क्रा और उसके दोस्त खिड़की से पहले ही अंदर आ चुके थे.

वे भी पार्टी में शामिल होना चाहते थे.

"यह तो अति से ज़्यादा हो गया," पापा ने गरजते हुए कहा. "अब उस कौवे को जाना ही होगा."

यह सुनकर बच्चे बहुत रोए. लेकिन माता-पिता अपने निर्णय पर दृढ़ थे. अब क्रा-क्रा उनके घर में नहीं रहेगा.

अगले दिन बच्चों को क्रा-क्रा को एक टोकरी में रखा, और इवाश्का उन्हें दूर के जंगल में एक लंबा रास्ता तय करके ले गया, जहाँ उन्हें क्रा-क्रा को मुक्त करना था.

जब बच्चे गाड़ी में चढ़े तो वो बहुत दुखी महसूस कर रहे थे. जल्द ही उन्होंने देखा कि उनका कौवा अपनी नई दुनिया में, पेड़ों की हरी पत्तियों के बीच गायब हो गया था.

"वो हमारे बिना कैसे जिएगा?" मरीना ने उत्सुकता से पूछा.

वे जंगल के रास्ते में वापस लौट रहे थे तभी इवाशका गेहूँ की कटाई कर रहे कुछ किसानों के साथ बातचीत करने लगा.

अचानक आकाश में कौवों ने एक उड़ान भरी, और फिर झपट्टा मारकर वे पेड़ों की ओर बढ़े.

"ज़रा, देखो!" कॉन्स्टेंटाइन ने रोते हुए कहा. "शायद वे क्रा-क्रा को चोट पहुँचाएँगे."

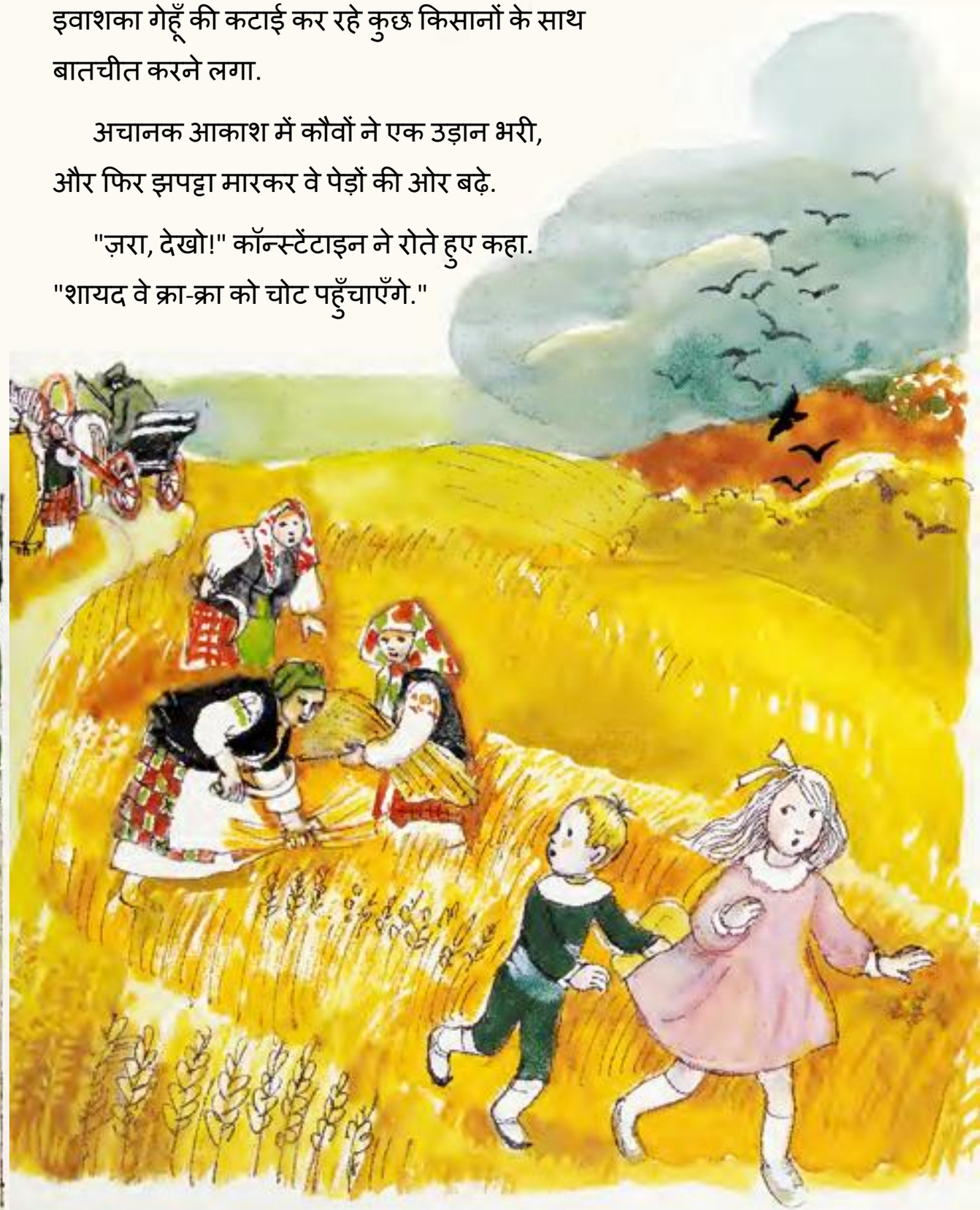

बच्चे जंगल में वापस भागकर गए, लेकिन वहां क्रा-क्रा का कोई निशान नहीं था. उनके चारों ओर ऊँचे-ऊँचे काले-वृक्ष खड़े थे और उनकी पत्तों से लदी डालियाँ हवा में हिल रही थीं.

"इवाश्का! इवाश्का!" वे चिल्लाए परन्तु उनके शब्द तेज़ हवा में उड़कर कहीं खो गए.

फिर, झाड़ियों में से किसी भी हवा से भी तेज़ एक कर्कश कर्कश आवाज आई. बच्चों ने घबराते हुए एक-दूसरे का हाथ पकड़ा. तभी उन्हें झाड़ियों में से एक थूथनी दिखाई दी.

वो एक भालू था.....!

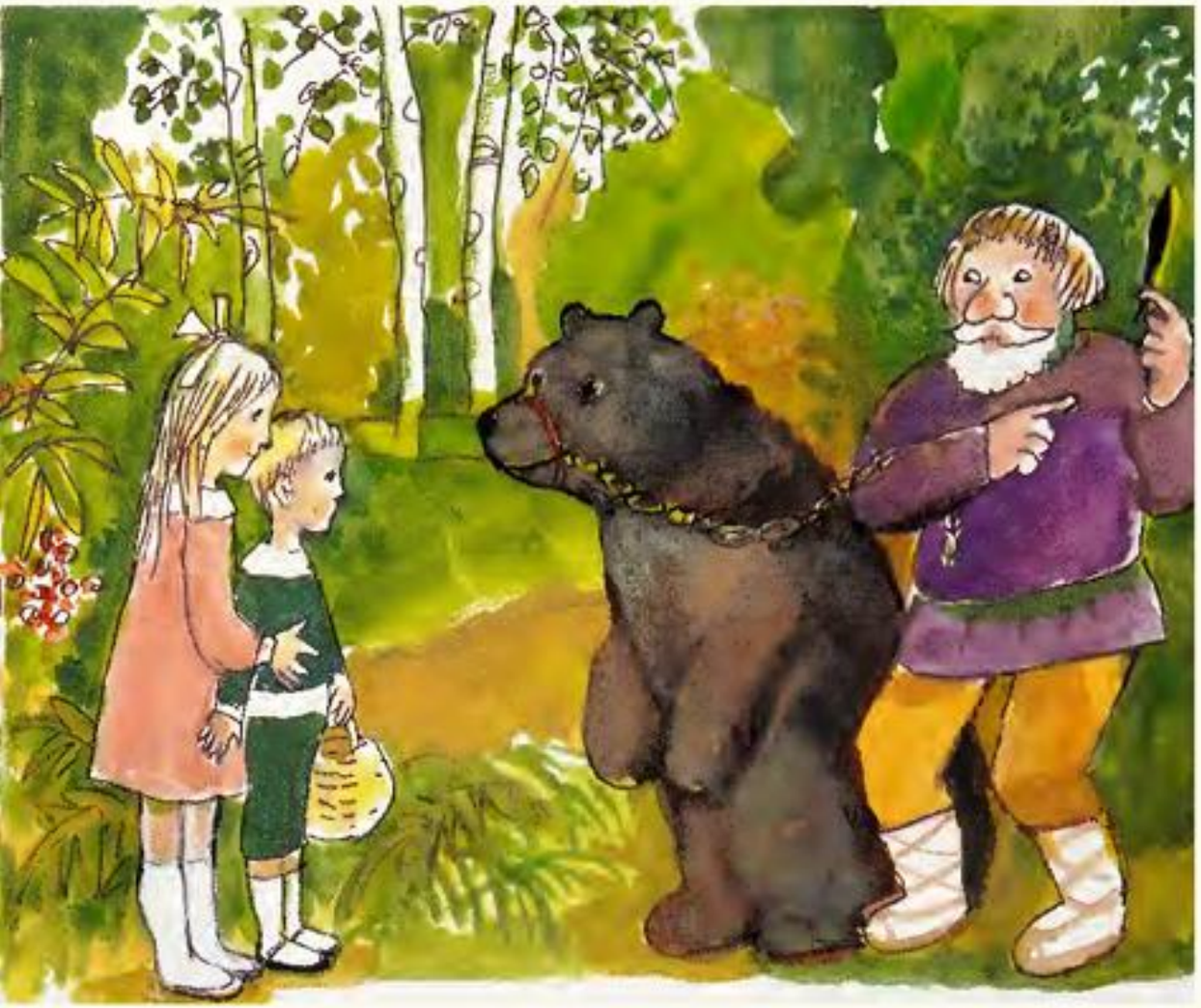

... एक चेन से बंधा भालू मिशा, अपने रक्षक के साथ था!

"बच्चों, तुम यहाँ जंगल के बीच में क्या कर रहे हो?" भालू के रखवाले ने पूछा.

"हमने अपना कौवा खो दिया है! और अब हम अपने घर रास्ता भी भूल गए हैं," मरीना ने कहा.

फिर रखवाले ने उन्हें एक चमकदार काला पंख दिखाया. "मुझे यह रास्ते में मिला," उसने अपने पीछे इशारा करते हुए कहा.

बच्चे पेड़ों के बीच से घूमते हुए रास्ते पर चलते रहे, और अंत में वे जंगल के किनारे पर आ गए.

वहां से कुछ ही दूरी पर उनका घर था.

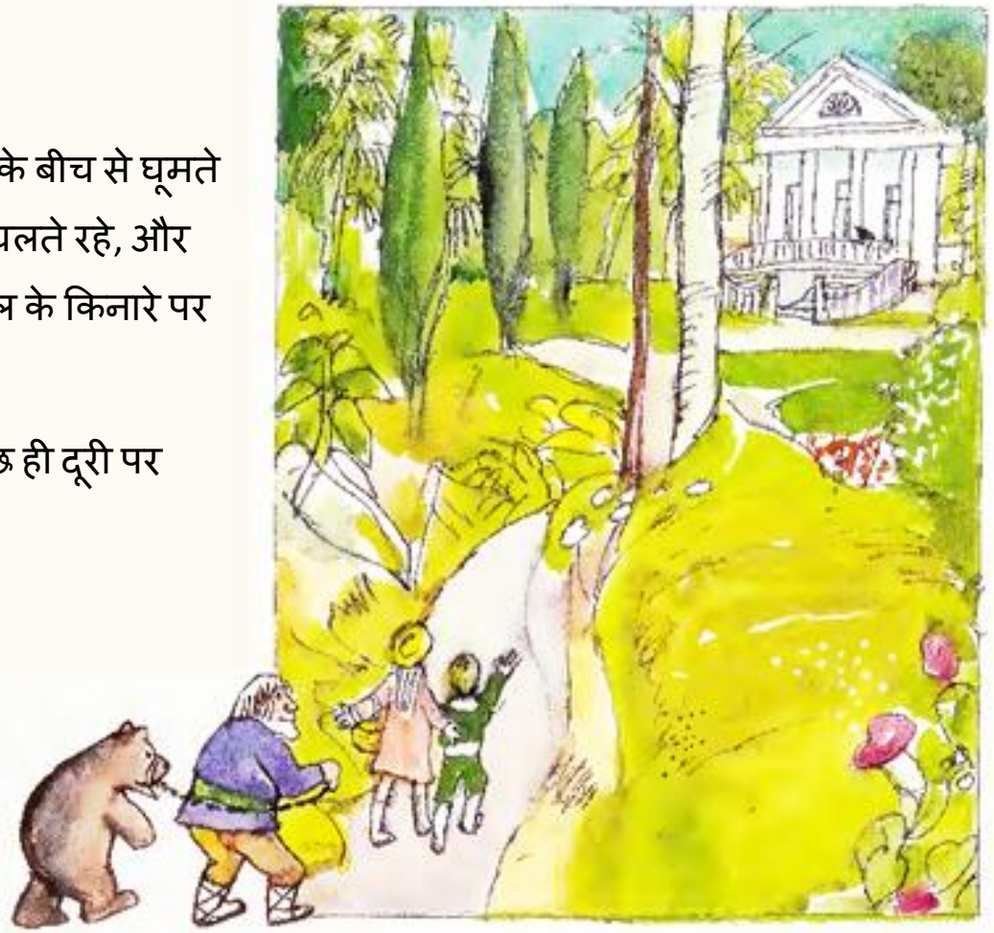

लेकिन वहां बरामदे में वो कौन था? क्या वो क्रा-क्रा हो सकता था! क्या वो आगे उड़कर उनका इंतजार कर रहा था.

सारा घर सीढ़ियों से नीचे उतरकर आया.

"हम लोग बहुत चिंतित थे," सभी ने कहा.

"जब इवाश्का तुम्हारे बिना वापस आया, तो हमने सोचा कि तुम्हें जंगली भेड़ियों ने खा लिया होगा."

तभी भालू के रखवाले ने अपना परिचय दिया और बताया कि कैसे उसने बच्चों को जंगल में भटकते हुए पाया था.

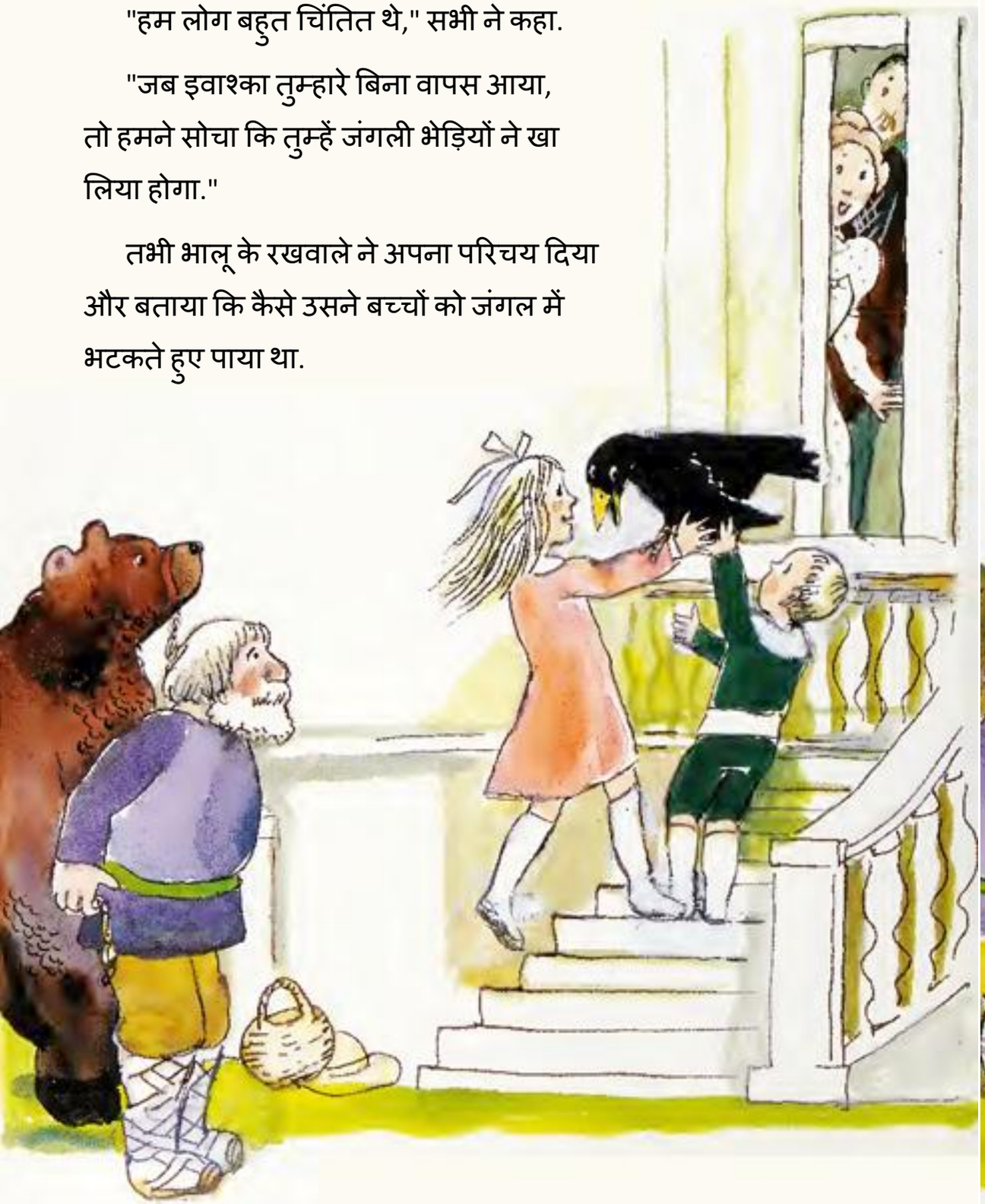

"यह वास्तव में क्रा-क्रा था जिसने हमें घर का रास्ता दिखाया," मरीना फुसफुसाई. "उसने हमारे लिए एक निशानी छोड़ी — अपना पंख. कृपया उसे क्षमा करें और उसे हमारे साथ रहने दें."

मम्मा ने पापा की तरफ देखा और पापा ने अपना सिर हिलाया.

"हम क्रा-क्रा को एक और मौका देंगे," उन्होंने कहा.

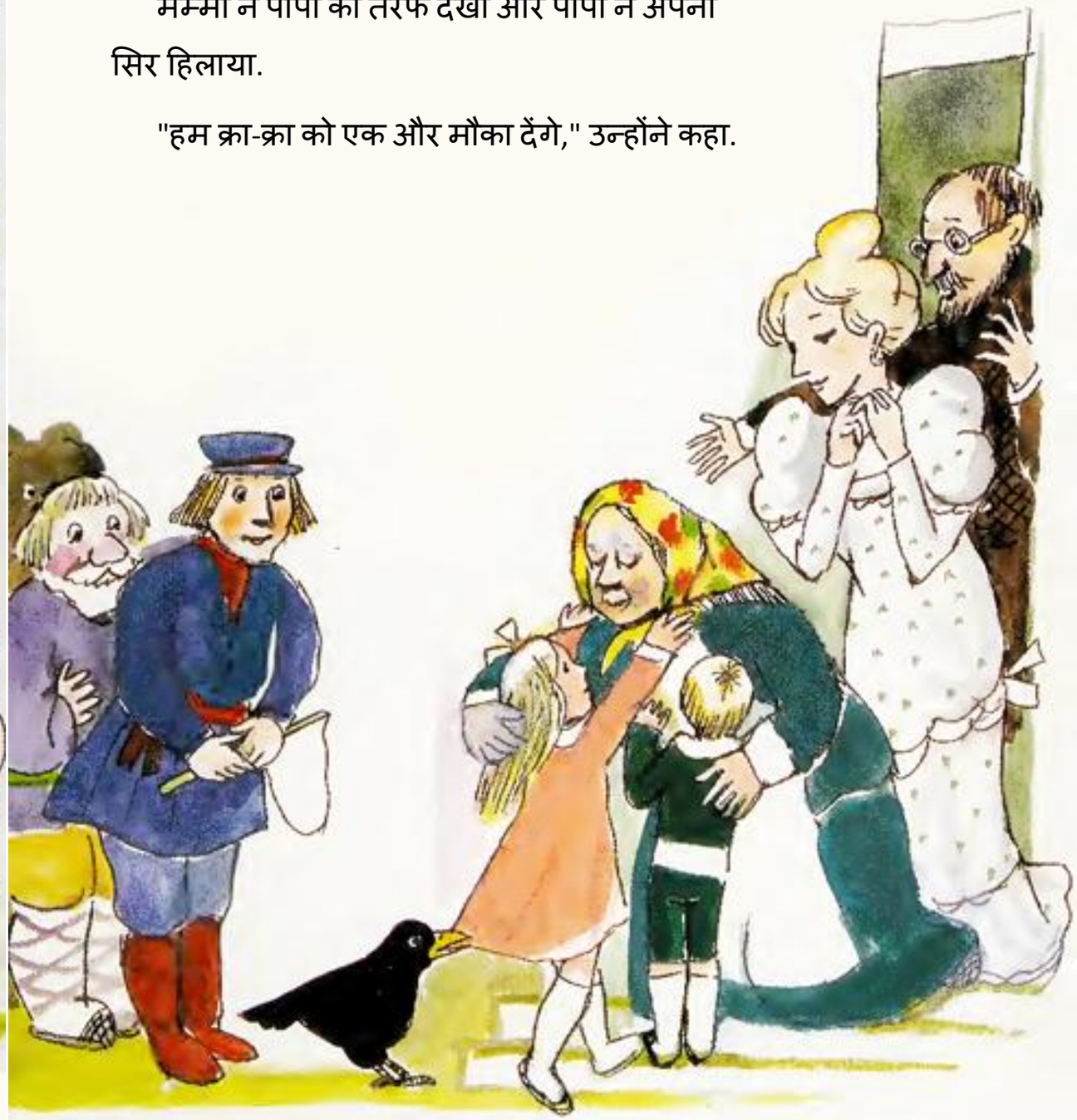

वे सब चाय पीने बैठ गए और बच्चों ने अपने साहसिक कार्य को फिर से बताया. अचानक पापा ने अपने चेहरे पर हाथ रखा.

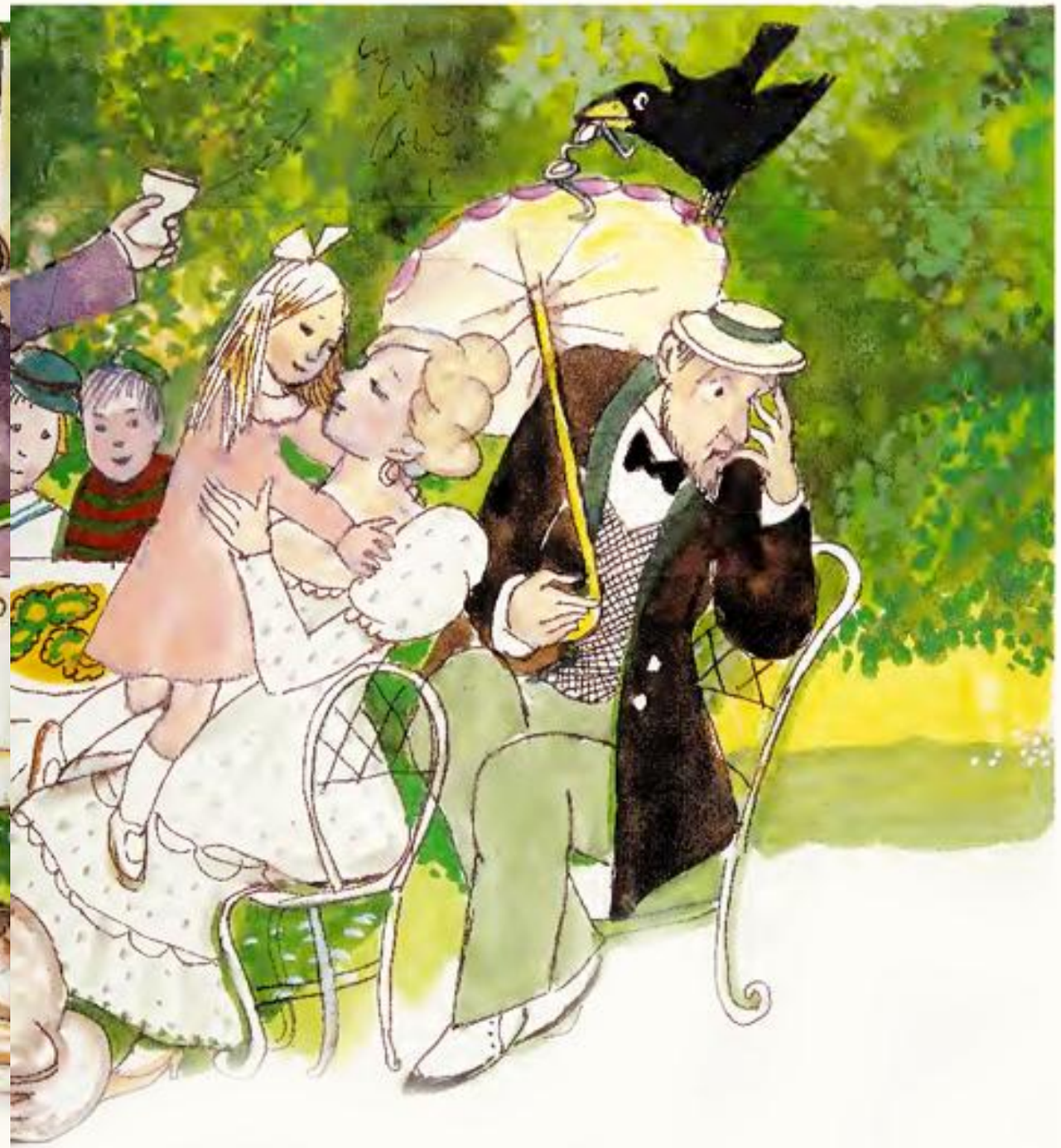

"यह बड़ी मज़ेदार बात है," उन्होंने कहा. "मैं कसम से कह सकता हूं कि मैंने अपना चश्मा पहना था. लेकिन अब वो गायब है. वो कहाँ हो सकता है? क्रा-क्रा? क्रा-क्रा...!"

अंत